पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.9.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

।। ओ३म् ।।

# युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

**केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्**

**प्रान्तीय कार्यकर्ता बैठक**

**रविवार 22 सितम्बर 2013**

**प्रात: 11 बजे**

**वैदिक साधन आश्रम, आर्य नगर, रोहतक**

भवदीय

मनोहरलाल चावला — प्रान्तीय अध्यक्ष
वीरेन्द्र योगाचार्य — महामन्त्री

वर्ष-30 अंक-08 आश्विन-2070 दयानन्दाब्द 190 16 सितम्बर से 30 सितम्बर 2013 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.9.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

## पाखण्ड व अन्धविश्वास सभ्य समाज के लिए घातक

–आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी

समाजसेवी श्री प्रवीन त्यागी व श्री मायाप्रकाश त्यागी का अभिनन्दन करते श्री महेन्द्र भाई, डा.अनिल आर्य व प्रवीन आर्य।

गाजियाबाद। रविवार, 8 सितम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उतर प्रदेश के तत्वावधान में राज नगर में आयोजित आर्य सम्मेलन मे श्री मायाप्रकाश त्यागी का ''आर्य उप–प्रतिनिधि सभा जनपद् गाजियाबाद'' के संरक्षक चुने जाने पर भव्य अभिनन्दन किया गया। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य व महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई ने शॉल व स्मृति चिन्ह प्रदान कर अभिनन्दन किया।

आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी ने कहा कि आज समाज में अन्धविश्वास व पाखण्ड बढ़ रहे हैं। नई युवा पीढ़ी को भी यह बाबा लोग धर्म के नाम पर भ्रमित कर रहे हैं यह चिन्ता का विषय है, आर्य जनों को इस अन्धविश्वास के विरूद्वजनजागरण करने के लिये आगे आना होगा।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने मुज्जफ्फर नगर में हुई हिंसा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए केन्द्र सरकार से उतर प्रदेश सरकार को भंग करके राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की। डा. आर्य ने कहा कि उतर प्रदेश सरकार वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की नीति पर चल रही है जिससे हालात इस कदर बिगड़े है। उतर प्रदेश में आज हिन्दू दूसरे दर्जे का नागरिक बन कर रह गया है।

प्रान्तीय महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि सरकार को चाहिये कि दोषी व्यक्तियों को सजा दे तथा तथा समान आचार सहिंता का पालन करे राजा के लिए सभी वर्ग बराबर होते हैं। इस अवसर पर प्रवीन त्यागी (एम.डी.,वी.वी.आई.पी.रैजीडैन्सी), महेन्द्र भाई, सौरभ गुप्ता, सुदेश त्यागी, विभोर त्यागी, राहुल आर्य, आचार्य यशपाल शास्त्री, वैभव त्यागी आदि उपस्थित थे। आचार्य पवन वीर के ब्रह्मत्व मे यज्ञ सम्पन्न हुआ।

## नोएडा आर्य समाज में विद्वत गोष्ठी सम्पन्न

रविवार, 1 सितम्बर 2013, आर्य समाज, सैक्टर-33, नोएडा में आयोजित विद्वत गोष्ठी में पुरस्कार वितरण करते श्री आनन्द चौहान, श्री अजय चौहान, श्री सुधीर सिंघल, साथ में प्रधान श्रीमती गायत्री मीना। कुशल संचालन डा.जयेन्द्र आचार्य ने किया।

## डॉ. अनिल आर्य पुनः ''राष्ट्रीय अध्यक्ष'' सर्वसम्मति से निर्वाचित

वार्षिक बैठक को सम्बोधित करते श्री महेन्द्र भाई, मंच पर बायें से श्री यशोवीर आर्य, डा.अनिल आर्य, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री रामकुमार सिंह व विश्वनाथ जी। द्वितीय चित्र में नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, महामंत्री महेन्द्र भाई व कोषाध्यक्ष धर्मपाल आर्य अपनी टीम के साथ।

रविवार 25 अगस्त 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली की द्विवार्षिक अतरंग सभा की बैठक आर्य समाज कबीर नगर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली में आचार्य प्रेम पाल शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई

जिसमें वर्ष 2013–2015 के लिए **डॉ. अनिल आर्य– राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री महेन्द्र भाई– राष्ट्रीय महामन्त्री एवम् श्री धर्मपाल आर्य– कोषाध्यक्ष** सर्वसम्मति से चुने गए। शेष कार्यकारिणी एवम अतरंग सभा गठित करने के लिए उन्हें अधिकार दिया गया। गत वर्ष का आय–व्यय लेखा जोखा, वार्षिक प्रगति विवरण स्वीकारते हुए आर्य जगत की ओर से हार्दिक बधाई।

# 'बुद्धि प्राप्ति की सर्वोत्तम प्रार्थना के कारण गायत्री मंत्र ईश्वर रचित है'

– मनमोहन कुमार आर्य

गायत्री मन्त्र ईश्वर से की जाने वाली अनेकानेक सर्वश्रेष्ठ प्रार्थनाओं में से एक मन्त्र है। पहले गायत्री मन्त्र को प्रस्तुत कर उसके शब्दों व अर्थों को देख लेते हैं। 'ओउम् भूर्भवः स्वः। तत्सवितुर्वरेश्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रयोद्यात्।।' मन्त्र के पहले तीन पदों या शब्दों भू, भुवः व स्वः में कहा गया है कि ईश्वर हमें प्राशों से भी प्रिय है, वह दुःखों से रहित व जिसकी प्रार्थना-उपासना से भक्तों के दुःख सर्वथा छूट जाते हैं, वही ईश्वर सुख स्वरूप भी है जो अपने उपासकों को आरोग्य, दीर्घ आयु, विद्या, सुख-सम्पत्ति व यश एवं कीर्ति आदि धान प्रदान करता है। 'तत्सवितुर्वरेश्यम्' में कहा गया कि वह परमेश्वर सूर्य आदि समस्त संसार का रचयिता है, वही हमारा उपासनीय व स्तुति-योग्य है। 'भर्गो देवस्य धीमहि' पद कह रहे हैं कि हम सारे संसार का उपकार करने वाले उस ईश्वर के दिव्य गुणों को अपने जीवन व व्यवहार में धाारण करें। 'धियो यो नः प्रचोदयात' में कहा गया कि वह ईश्वर हमारी बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्ग में चलने की प्रेरणा दें। इस मन्त्र में हमने देखा कि उपासक ईश्वर को उपासनीय मानकर उससे श्रेष्ठ बुद्धि की प्रार्थना कर रहा है। इस मन्त्र पर विचार करने से एक बात तो यह सामने आती है कि उपासक ईश्वर को जान गया है कि हमसे भिन्न एक ऐसी सत्ता है जो हमारे प्राशों से भी मूल्यवान है, दुःख रहित है और हमारे दुःखों को दूर करने वाली है तथा हमें सुखों को प्राप्त भी कराती है। संसार का यह नियम है कि प्रार्थना उसी से कोई करता जिसके पास मांगी जा रही वस्तु या वस्तुयें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती हैं और उसका देने का स्वभाव होता है।

गायत्री मन्त्र में ईश्वर व उसके गुणों की चर्चा है जो सभी मनुष्यों के लिए आवश्यक एवं उपयोगी हैं। यह प्रार्थना मन्त्र अस्तित्व में कैसे आया इस पर विचार करते हैं। पहली शंका तो यह है इसे वस्तुतः मनुष्यों ने बनाया या नहीं? मनुष्य यदि बनायेगें तो उनके पास भाषा का ज्ञान होना चाहिये जिसमें यह बना है। भाषा संस्कृत है। भाषा का ज्ञान होने पर उसमें प्रार्थना, उपासना व स्तुति के श्लोक, पद्य व गद्य में रचना की जा सकती है। जहां तक मूल भाषा का प्रश्न है, मनुष्य उस सर्व प्रथम मूल भाषा को नहीं बना सकते। इसके लिए प्राचीन काल में कई प्रयोग भी हुए जिनसे ज्ञात हुआ कि अक्षर, पद व वाक्य जो भाषा के मूल आधार हैं, उन्हें बनाने में मनुष्य समर्थ नहीं है। इतिहास व शब्द प्रमाणों के आधार पर वेद भाषा अपौरूषेय सिद्ध होती है। अपौरूषेय का अर्थ वह कार्य हैं जो मनुष्य कदापि नहीं कर सकता। वह ईश्वर के द्वारा किये गये होते हैं। वैज्ञानिक कहते हैं कि ऐसे कार्य स्वतः या अपने-आप होते हैं। यह बुद्धि का दुरूपयोग है। बुद्धि पूर्वक की गई कोई भी रचना अपने-आप कभी नहीं होती, वह यदि अपौरूषेय है, तो निश्चित रूप से ईश्वर के द्वारा की गई होती है। अतः वैज्ञानिकों की अपौरूषेय रचनाओं यथा ब्रह्माण्ड, सृष्टि व इसमें वन, पर्वत, जल, वायु, अग्नि को जड़-प्रकृति द्वारा, स्वतः या अपने-आप रचा हुआ मानने का सिद्धान्त असत्य या गलत है। अतः सभी अपौरूषेय रचनायें ईश्वर द्वारा की गई हैं। ईश्वर ने गायत्री मन्त्र को क्यों बनाया, इस पर विचार करना भी उपयोगी है। ईश्वर ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को अपने पुत्र व पुत्रियों की भांति प्रेम व स्नेह करता है। इस कारण वह सभी जीवों का कल्याण करना चाहता है। तर्क व प्रमाणों से सिद्ध है कि जीव अपने कर्मानुसार जन्म पाते हैं। जीवों का जो पार्थिव शरीर होता है वह नाशवान होता है। जन्म के पश्चात कुछ समय इसमें वृद्धि होती है, उसके पश्चात स्थिरता आती है और बाद में वृद्धावस्था आकर मृत्यु हो जाती है।

कर्म व्यवस्था में मनुष्यों के पुण्य व पाप कर्म, कर्मो की प्रकृति के भेद से दो प्रकार के होते हैं। ईश्वरीय व्यवस्था से पुण्य कर्मो का फल सुख रूप में तथा पाप कर्मो का फल दुःख रूप में प्राप्त होता है। इस कारण एक अच्छे व्यवस्थापक या रचयिता होने के कारण ईश्वर का यह दायित्व बनता है कि वह सभी मनुष्यों को अपने स्वरूप का ज्ञान कराये, जीवों को भी उनके स्वरूप का ज्ञान कराना उसका कर्तव्य बनता है अन्यथा जीव अज्ञानी रहेगा और वह पाप-पुण्य का बोध न होने के कारण फल का उत्तरदायी नहीं बन सकेगा। ईश्वर इस सृष्टि की कारण अवस्था व कार्य अवस्था तथा जीवों के सभी प्रकार के कर्तव्यों व अकर्तव्यों का भी बोध कराता है जो कि उसका दायित्व है। ईश्वर अपने इस दायित्व को सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान देकर पूरा करता है। जो इस ज्ञान के यथार्थ स्वरूप का प्रचार-प्रसार करते हैं वह ईश्वर की व्यवस्था से सुख व उन्नति अर्थात् अपवर्ग-मोक्ष-मुक्ति के भागी होते हैं, जो प्रचार नहीं करते, स्वार्थ सिद्ध करते हैं, लोगों को गुमराह करते और नाना प्रकार से सामान्य जनों को वेदों से दूर करते हैं वह सब, ईश्वर के दण्ड के भागी होते हैं। अतः ईश्वर ने जहां मनुष्यों को वेदों के माध्यम से कर्तव्य व अकर्तव्य का बोधा कराया, वहीं मनुष्यों को गायत्री मन्त्र के द्वारा यह ज्ञान दिया कि जीवों को ईश्वर से प्रेम करना चाहिये जिसका आधाार ईश्वर भक्ति व योगाभ्यास है। ईश्वर के विचार, ध्यान व चिन्तन तथा भद्र को धारश व अभद्र के त्याग से ही हमारे सभी दुःख दूर होगें व सुख की प्राप्ति होगी। इसके लिए सर्वाधािक वरणरीय यदि संसार में कुछ है तो वह ईश्वर ही है। ईश्वर हमारा आचार्य, राजा, न्यायाधाीश, नेता व सर्वस्व है। इस प्रकार ईश्वर को जानकर व मानकर, स्तुति प्रार्थना व उपासना करके ईश्वर को पूर्श समर्पश करना व उससे प्रार्थना करना की वह हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा करे जिससे हम जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष तथा अभ्युदय व निःश्रेयस को प्राप्त कर जीवन को सफल कर सकें।

इतिहास में हम पाते हैं कि सृष्टि के आरम्भ से आज तक सभी विद्वान, देव, आचार्य, गुरू, ऋषि, मुनि, यति, योगी, राम, कृष्ण, शंकराचार्य, दयानन्द आदि ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर अपना जीवन सफल मानते रहे हैं। उनके अन्दर आत्म-सन्तोष व प्रसन्नता तथा सुख का भाव देखा गया है। इसके विपरीत जीवन जीने वालों पर भी यदि दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि वे येन, केन, प्रकारेण धन-दौलत की प्राप्ति में लगे हैं और धर्म, कर्म, योग, ईश्वरोपासना, यज्ञ, सत्संग, स्वाध्याय, चिन्तन, ध्यान व समाधि से उन्हें कुछ लेना देना नहीं है। उनके कारण भौतिक सुख सामग्री का अत्यधिक भोग हो रहा है जिससे स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि प्रकृति में असन्तुलन पैदा हो गया है। आज न वायु शुद्ध है और न समुद्र, नदियों, कुओं व वर्षा का जल ही। वृक्षों को अन्धाधुंध काटने व आद्याोगिक विस्तार से जीवन रोगों का घर बन गया है जहां अकाल मृत्यु, दुःख व भय का वातावरण है। अतः सच्ची आध्यत्मिकता के प्रचलन व व्यवहार से तथा जीवन को अध्यात्म से भर कर ही मानव जीवन को दुःखों से मुक्त किया जा सकता है।

गायत्री मन्त्र में ईश्वर से बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करने की प्रार्थना की गई है। आजकल की तरह धन, सम्पत्ति, भौतिक सुख साधन यथा भव्य बंगला, कार, बैंक बैलेन्स व पुत्र आदि नही मांगा गया है। इस मन्त्र में निहित उत्तोतम शिक्षा व विचार से संकेत मिलता है कि यह मनुष्यों द्वारा निर्मित न होकर ईश्वर के द्वारा प्रदत्त है। बुद्धि की प्रार्थना इसलिए की गई हैं कि बुद्धि सत्य व असत्य का विवेचन करती है। इससे ज्ञान उत्पन्न होता है। यह ज्ञान संसार के सभी प्रकार की सुख-सामग्री से मूल्यवान व लाभ प्रदत्त है। इससे इस जीवन में भी लाभ है एवं पारलौकिक जीवन में भी। ज्ञान प्राप्त होने पर सभी प्रकार की भौतिक सुख सामग्री भी एकत्रित की जा सकती है। ज्ञान से दुःखों की निवृति होती है और जीवन सफल होता है। आज संसार में अज्ञान, दुःख, भय, चिन्ता, द्वेष, शत्रुता, भ्रष्टाचार आदि का बोलबाला है। इसका कारण यथार्थ ज्ञान का न होना है। गायत्री मन्त्र से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने वाले उपासक की बुद्धि पवित्र होकर यथार्थ ज्ञान को उत्पन्न करती है जो अभ्युदय व निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति का साधन है। अतः गायत्री मंत्र आज भी प्रासंगिक व उपादेय है एवं प्रलय पर्यन्त उपयोगी रहेगा। ईश्वर की हम पर अहेतुकी कृपा का परिणाम ही वेदों का ज्ञान व गायत्री मन्त्र है। हमें ईश्वर का कृतज्ञ रहना है और सात्विक बुद्धि प्राप्त कर समाज, देश व विश्व का कल्याण करना है। गायत्री मन्त्र को प्रत्येक मानव तक पहुंचाना है जिससे स्वार्थी लोग भोले-भाले मनुष्यों को मूर्ख न बना सके। इसकी रक्षा करते हुए इसका अधिक से अधिक प्रचार करना है। इस मन्त्र में निहित विचारों को धाारण कर हम सभी अपना जीवन आदर्श बनायें व दूसरों को इसकी सतत प्रेरशा करते रहें।

सम्पर्कः 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, दूरभाषः 09412985121

# कनाडा में 108 कुण्डीय यज्ञ व सौरखा नोएडा में आर्ष कन्या गुरुकुल का उत्सव सम्पन्न

कनाडा के आर्य समाज, मारखम, टोरंटो में दिल्ली के सुप्रसिद्धवैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने 108 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न करवाया। समाज के प्रधान श्री सुदर्शन बेरी ने सभी का आभार व्यक्त किया। द्वितीय चित्र में रविवार, 15 सितम्बर 2013, आर्ष कन्या गुरूकुल, सौरखा गांव, नोएडा का उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में डा.जयेन्द्र आचार्य का अभिनन्दन करते श्री मायाप्रकाश त्यागी, डा.अनिल आर्य, कै.अशोक गुलाटी, दीपक भार्गव व श्री सुधीर कुमार मिड्डा आदि।

# परिषद् की दिल्ली प्रदेश की बैठक में वालीबाल वितरित

रविवार, 15 सितम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश की बैठक डा.अनिल आर्य की अध्यक्षता में आर्य समाज,कबीर बस्ती,दिल्ली में सम्पन्न हुई। जिसमें देश की वर्तमान स्थिति व शाखाओ को मजबूत बनाने पर विचार हुआ। नवनियुक्त कर्मठ शाखाध्यक्षों को वालीबाल वितरित की गई। प्रान्तीय संचालक श्री रामकुमार सिंह ने संचालन किया। श्री महेन्द्र भाई, श्री ओम सपरा, श्री मायाराम शास्त्री, श्री हीराप्रसाद शास्त्री, श्री देवेन्द्र भगत, श्री ओमबीर सिंह, श्री देवदत आर्य, श्री सौरभ गुप्ता आदि ने अपने विचार रखे। चित्र में वालीबाल लिये शाखाध्यक्ष व द्वितीय चित्र में विमल आर्य पुरस्कार लेते हुये।

## स्व.विश्वमित्र सत्यार्थी की पुस्तक का विमोचन

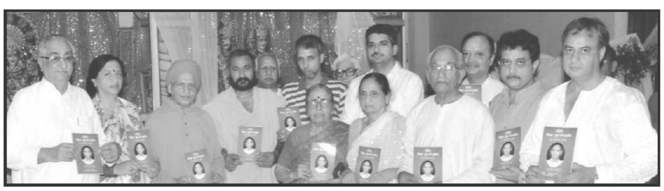

11 अगस्त 2013, फरीदाबाद, साहित्यकार स्व.विश्वामित्र सत्यार्थी की पुस्तक ''पिता पुत्र के प्रंसग'' का विमोचन हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री श्री ए.सी.चौधरी व स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती ने किया। इस अवसर पर पार्षद योगेश ढींगरा, सीमा त्रिखा, आचार्य ऋषिपाल शास्त्री, विवेक प्रताप, माता स्वदेश सत्यार्थी आदि उपस्थित थे। संचालन श्री वासु सत्यार्थी ने किया।

## आर्य समाज रोहिणी का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज,रोहिणी, सैक्टर-7, दिल्ली का वेद प्रचार सप्ताह 29 अगस्त से 1 सितम्बर 2013 तक सौल्लास सम्पन्न हुआ। डा.शिवकुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में 11 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न हुआ।श्रीमती पूजा व नितिन मितल ने ओउम् ध्वज फहराया।पं.श्यामवीर राघव के मधुर भजन हुए ।मण्डल के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता ने अध्यक्षता की। डा.अनिल आर्य ने भी उदबोधन दिया। मंत्री श्री राजीव आर्य ने संचालन व प्रधान श्री शिवकुमार गुप्ता ने आभार व्यक्त किया।

## आर्य समाज,सरस्वती विहार का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज,सरस्वती विहार, दिल्ली के चुनाव में श्री नन्द किशोर गुप्ता-प्रधान,श्री ओमप्रकाश मनचन्दा-कार्यकर्ता प्रधान, श्री अरूण आर्य-मन्त्री व श्री नितिन दुआ-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

**महर्षि दयानन्द के बलिदान दिवस पर भव्य संगीत संध्या**

**''एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम''**

सोमवार, 4 नवम्बर 2013, सांय 4 से 8 बजे तक

स्थान: दिल्ली हाट, पीतमपुरा, दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन नेताजी सुभाष पैलेस)

**गायक कलाकार:**- श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' व श्रीमती सुदेश आर्या

**यज्ञ ब्रह्मा**- आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

**समारोह अध्यक्ष**-श्री प्रदीप तायल (पाईटैक्स ज्वैलर्स, पीतमपुरा)

**मुख्य यज्ञमान**- श्री दर्शन अग्निहोत्री जी

**ऋषि लंगर रात्री 8 बजे :**- आप सभी गुरूवर देव दयानन्द को श्रद्वासुमन अर्पित करने सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

निवेदक:-

| | | |
|---|---|---|
| **डा.अनिल आर्य** | **महेन्द्र भाई** | **धर्मपाल आर्य** |
| राष्ट्रीय अध्यक्ष | राष्ट्रीय महामंत्री | कोषाध्यक्ष |

**दिल्ली चलो आर्यों दिल्ली चलो**

**केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में**

**251 कुण्डीय विराट् यज्ञ एवं**

**अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन**

**दिनांक 24, 25, 26 जनवरी 2014**

**रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक,**

**पीतमपुरा, दिल्ली-110034**

**हजारों की संख्या में पहूंचे**

**-डा.अनिल आर्य, मुख्य संयोजक**

# आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री का अभिनन्दन व दीवान हाल में श्रावणी पर्व सम्पन्न

कर्मठ समाज सेवी, आर्य नेता श्रीमती सरोज व श्री दर्शन अग्निहोत्री का शाल व स्मृति चिन्ह से अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, साथ में श्री अनिल हाण्डा, दिनेश सिंह आर्य। द्वितीय चित्र में आर्य समाज दीवान हाल,चांदनी चौक,दिल्ली में 28 अगस्त 2013 को आयोजित समारोह में भजनोपदेशक का सम्मान करते मंत्री डा.रवि कांत, डा.अनिल आर्य,उमेश गुप्ता,आचार्य विद्युत शास्त्री।

# श्री वैभव त्यागी का जन्मोत्सव सम्पन्न व आचार्य पवन वीर का अभिनन्दन

बधाई-रविवार, 8 सितम्बर 2013,आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी के पौत्र वैभव के जन्मोत्सव पर बधाई देते डा.अनिल आर्य, दादी श्रीमती उर्मिला देवी, प्रवीन त्यागी, सुमन त्यागी,विभोर व महेन्द्र भाई जी। द्वितीय चित्र में गुरूकुल शुकताल,मुजफ्फर नगर, उ.प्र. के आचार्य पवनवीर शास्त्री का अभिनन्दन करते श्री मायाप्रकाश त्यागी, डा.अनिल आर्य, यशपाल शास्त्री व प्रवीन आर्य।

# आर्य समाज सूर्य निकेतन एवम् आर्य समाज प्रताप नगर का उत्सव सम्पन्न

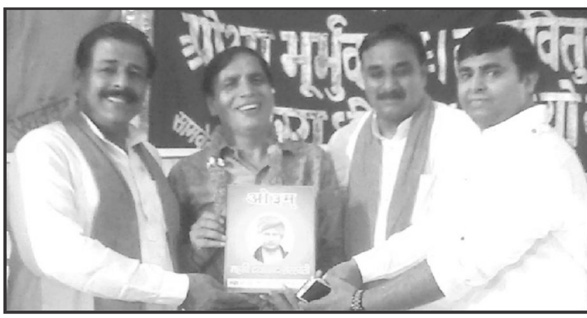

15 अगस्त 2013, आर्य समाज, सूर्य निकेतन, दिल्ली में आयोजित स्वतन्त्रता दिवस समारोह में उपमहापौर श्री महेन्द्र आहूजा का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,रामकुमार सिंह व विकास गोगिया। शनिवार, 31 अगस्त 2013, आर्य समाज, प्रताप नगर, दिल्ली के वार्षिक उत्सव पर श्री यशोवीर आर्य का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, मन्त्री श्री केवल कृष्ण सेठी,आचार्य प्रेमपाल शास्त्री व आ.अभयदेव शास्त्री।

# उ.प्र. में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग

10 सितम्बर 2013, दिल्ली के जन्तर मन्तर पर राष्ट्रवादी शिवसेना ने मुजफ्फनगर में यू.पी. में हुए हिंसा के विरूद्ध में प्रदर्शन कर उत्तर प्रदेश सरकार भंग करने की मांग की। श्री जयभगवान गोयल, स्वामी ओम जी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री मुकेश जैन, श्री ईश्वर सिंह आदि ने सम्बोधित किया।

## शोक समाचार : श्री वीरेश प्रताप चौधरी का निधन

1. आर्य नेता, सुप्रसिद्वअधिवक्ता श्री वीरेशप्रताप चौधरी का गत् दिनों निधन हो गया। स्वामी रामदेव जी, स्वामी अग्निवेश, श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री अरूण जेतली, श्री शरद यादव, डा.अनिल आर्य, श्री महेन्द्र भाई, श्री विजय गोयल, श्री जयप्रकाश अग्रवाल, डा.हर्षवर्धन, श्री विजय जौली, श्री प्रवेश वर्मा, डा.रमाकांत गोस्वामी, डा.अशोक वालिया, श्री सुभाष आर्य, श्री ओमप्रकाश कोहली, डा.वेदप्रताप वैदिक आदि ने पहुंच कर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।
2. माता शांति देवी (माता श्री नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' ) का गत् दिनों निधन हो गया।
3. श्री अमित चुघ (सुपुत्र श्री ओमप्रकाश चुघ, रोहिणी) का शनिवार, 14 सितम्बर 2013 को निधन हो गया।
4. श्रीमती रतना देवी (माता श्री शिशुपाल आर्य) का गत दिनों निधन हो गया।
5. श्री राजपाल आर्य (मंत्री,आ.स.रेलवे रोड, रानी बाग) का गत दिनों निधन हो गया।

**युवा उदघोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970